of India for the services of a part of the financial year 1960-61."

The motion was adopted.

Shri Morarji Desai: I introduce† the Bill.

I beg to move†:

"That the Bill to provide for the withdrawal of certain sums from and out of the Consolidated Fund of India for the services of a part of the financial year 1960-61 be taken into consideration."

Mr. Deputy-Speaker: The question is:

"That the Bill to provide for the withdrawal of certain sums from and of the Consolidaed Fund of India for the services of a part of the financial year 1960-61 be taken into consideration."

The motion was adopted.

Mr. Deputy-Speaker: We shall now take the Bill clause by clause. As there are no amendments, I shall put all the clauses and the Schedule together. The question is:

"That clauses 2 and 3, the Scheduled, clause 1, the Enacting Formula and the Long Title stand part of the Bill."

The motion was adopted.

Clauses 2 and 3, the Schedule, Clause 1, the Enacting Formula and the Long Title were added to the Bill.

Shri Morarji Desai: I beg to move:

"That the Bill be passed".

Mr. Deputy-Speaker: The question is:

"That the Bill be passed".

The motion was adopted.

16.53 hrs.

FOREIGN TOURISTS*

Mr. Deputy-Speaker: We shall now take up the half-an-hour discussion.

श्री अ० मु० ताजिक (जम्मू तथा काश्मीर) : उपाध्यक्ष महोदय, मैं आज आप को आधे घंटे की बहस करने की इस वास्ते तकलीफ दे रहा हूं कि १८ फरवरी को मैंने इस हाउस में एक सवाल पूछा था जो इस तरह से था और उसी के बारे में मैं कुछ और अर्ज करना चाहता हूं :—

"Will the Minister of Transport and Communications be pleased to state whether it is a fact that the Government of India propose to take further steps to attract more foreign tourists to India?"

जहां तक बाहर के मुल्कों से सैयाहों को हिन्दुस्तान में लाने का मसला है इसमें कोई शक नहीं है कि हमारे वजीर साहब और डिपार्टमेंट इसकी बहुत कोशिश करते हैं। लेकिन यह सिर्फ कोशिश का सवाल नहीं है बल्कि सवाल यह है कि हिन्दुस्तान में बाहर से आए हुए लोगों को क्या क्या मुनासिब सहूलियतें पहुचाई जायें। मुनासिब सहूलियतों का मतलब सिर्फ यह नहीं है कि हम इस मुल्क के मशहूर तरीन इन्सान पंडित जवाहरलाल नेहरू का नाम ही इस सिलसिले में पेश करें। अभी चन्द महीने पहले ही हमारे प्राइम मिनिस्टर साहब ने इस चीज को महसूस किया था बाहर से आये हुये सैयाहों को इस मुल्क में कुछ तकलीफ होती है उनको सही किस्म का सलूक नहीं मिलता है और इसको सामने रखते हुए उन्होंने हिन्दुस्तान के लोगों के सामने एक अपील रखी थी जिसके अल्फाज ये हैं:—

"Visitor from abroad has to be welcomed as a guest and as a friend, so that he returns to his own country and carries back with him happy memories of his visit to India".

---

†Introduce/Moved with the recommendation of the President.

*Half-an-hour discussion.

यह अपील अभी शाया भी नहीं हुई थी, इसकी अभी स्याही भी नहीं सूखने पाई थी कि हमारे सामने एक मशहूर अमरीकी शहरी फेड्रिक मार्च का मसला आया । वह जब हिन्दुस्तान में आए तो सिर्फ हिन्दुस्तान की पुरानी इमारतों को ही नहीं बल्कि मौजूदा हिन्दुस्तान को, तरक्की करते हुए हिन्दुस्तान को और मौजूदा हिन्दुस्तान की सिविलाइजेशन को भी वह देखने आए । उनके साथ मदुराई में जो सलूक हुआ उसके बारे में सैनेट के एक मैम्बर ने अमरीका में जिस तरह का प्रोटैस्ट किया है और अमरीका के लोगों ने जिस तरह से इस चीज को महसूस किया है, वह आप जानते हैं । उन्होंने कहा है कि जवाहरलाल के हिन्दुस्तान में, अशोक के हिन्दुस्तान में और बढ़ते हुए हिन्दुस्तान में, एक अमरीकी सैयाह को किस तरह से मजबूरी की हालत में, किस तरह जलालत की हद तक रोका जाता है और उससे हुई एक मामूली सी गलती पर जो शायद उसकी गलती नहीं थी बल्कि किसी हद तक हमारी गलती थी, परेशान किया जाता है, यह देखने वाली बात है । अगर हम इस मुल्क में सही गाइड्स को, सही ट्रेवल एजेंट्स को रिकगनाइज करें तो इस तरह की तकलीफ पेश न आए । एक अनआथोराइज्ड ट्रेवल एजेंट ने उसको एक ऐसी टैक्सी में बिठा दिया जो कि उस इलाके में नहीं जा सकती थी चूंकि उसके पास लाइसेंस नहीं था जहां वह चली गई, तो वहां पर पुलिस ने उस टैक्सी को पकड़ा और उसके पास जो बैग वगैरह थे उनको खोला गया और उसके पास एक कलील मिकदार में जो शराब की चन्द बूंदें थीं उस बिना पर उसको जलील किया गया । इस सिलसिले में मैं नहीं जाना चाहता हूं कि शराब अच्छी चीज है या बुरी । लेकिन आपको फैसला करना है कि शराब को बिल्कुल हमेशा के लिये बन्द करना है या इसको रखना है और अगर कंसेशन देने हैं तो उस हद तक देने हैं जिसकी बाहर से आये हुए लोगों को तवक्को हो । अब उन से ८० हजार रुपये की जमानत ली गई । यह मामला अमरीकी ऐवान में आया । अमरीका के अखबारों ने इसकी चर्चा की । लेकिन चर्चा होना कोई बड़ी बात नहीं है । बड़ी बात यह है कि जब हम इस मुल्क में लाखों रुपये इस लिए खर्च करते हैं कि हिन्दुस्तान की खूबसूरती को शोहरत दें, यहां की दस्तकारी को शोहरत दें, यहां के लोगों के इखलाक को शोहरत दें, वहां पर हमारा थोड़ा सा यह फर्ज भी हो जाता है कि हम अपने डिपार्टमेंट में और ऐसे लोगों में जिनका ताल्लुक टूरिज्म से है उनको भी इस किस्म की तरबीयत दें जिस की कि लोग उन से तवक्को करते हैं । हमें चाहिये कि हम अच्छे गाइड पैदा करें, यहां अच्छे अच्छे होटल हों, हमारे लिए यह भी जरूरी है कि हम अपने गाइड्स को सही तालीम दें ।

अभी पिछले दिनों बाहर के मुल्कों से कुछ गाइड्स, कुछ लोग आए थे जो ट्रेवल एजेंट्स जो टूरिज्म के माहिर थे, उन्होंने इन बातों की सिफारिश की थी । उन्होंने कहा था कि हिन्दुस्तान में जितने बड़े बड़े होटल हैं उनके किचन उतने साफ नहीं हैं जितने होने चाहिये । यह एक हकीकत है ।

हम में से बहुत से लोग जो अकसर जाते हैं, जो देहाती लोग हैं, वे जाते हैं लाल कला को या ताज महल को देखने या किसी और जगह को देखने तो उनको कहीं भी अच्छे गाइड नहीं मिलते हैं जो उन्हें इमारत की खूबी से इमारत के तारीखी पस-मंजिर से रुशनास करा सकें ।

ये सब बातें ऐसी हैं जिनको यहां रखने के लिए मुझे इन डिसकशन को मांगना पड़ा है । यहां पर मैं यह भी कह देना चाहता हूं कि सिर्फ प्राइम मिनिस्टर साहब का नाम इस्तेमाल करने से, उसके बड़े बड़े फोटो छापने से, उनकी अपील को मोटे मोटे अलफाज में छापने से मसला हल नहीं हो सकता है । कितनी खूबसूरत नमवीर थी जिसके साथ प्राइम मिनिस्टर साहब की अपील को

[श्री अ० मु तारिक]

छापा गया था । लेकिन लोगों को वह मिल गई और उन्होंने काट कर उसको अपने अपने घरों में रख दिया । यह कहा जाता है कि दुनिया के एक मशहूर फोटोग्राफर ने इस तसवीर को खींचा था । इस वास्ते इस मुल्क के तालिबइल्मों में, इस मुल्क के दुकानदारों में और आम इनसानों में इस बात को पैदा करने की जरूरत है कि बाहर से अगर कोई टूरिस्ट आए तो उसके साथ किस किस्म का सलूक उन्हें करना चाहिए । लेकिन इसमें भी इस चीज का खयाल रखना चाहिए कि हम अपने लोगों में एहसास कमतरी, इनफीरियारिटी कम्पलैक्स, पैदा न करें । टूरिज्म का सिर्फ यह मतलब नहीं है कि बाहर के जो लोग आते हैं, सिर्फ वे ही टूरिस्ट हैं और अपने लाखों लोग जो जाते हैं किसी जगह को देखने, वे टूरिस्ट नहीं हैं । अगर हमने बाहर के टूरिस्ट्स को इतनी अहमियत न दी होती तो यह मामूली सी बात इतनी शोहरत हासिल न कर जाती । इस वास्ते इन सभी बातों पर ध्यान देने की आज जरूरत है ।

कई सालों से हम यहां यह कहते आ रहे है कि भीख मांगने वालों का नम्बर बहुत हद तक बढ़ता जा रहा है । जहां जाइये, रेलवे स्टेशन पर जाइये, अगर टूरिज्म हम को इस मुल्क में निभाना है, तरक्की देनी है तो हमें यह देखना है कि टूरिस्ट्स को सहूलियत भी मिले । हम उन से बहुत दाम वसूल करते हैं तो हमारे डाइरेक्टर जेनरल के फरायज में यह भी है । वह बहुत अच्छे आदमी हैं, दुनियां के टूरिज्म से वाकिफ हैं, काफी समझदार हैं इस मामले में । रेल के डब्बों की जांच कराना उन का काम है कि किस कदर गन्दे हैं हमारे डब्बे । जब आप फारेन्र्स को बुलाते हैं वे लाखों रुपये खर्च करना चाहते हैं इस मुल्क में, तो उन के लिये सहूलियात पैदा करना भी आप का फर्ज हो जाता है । टूरिज्म के यह माने नहीं हैं कि हम लोगों को बाहर से लायें लेकिन उन को ला कर मुनासिब सहूलियात भी न पहुंचायें । हम को भी सहूलियात मिलती हैं जब हम बाहर के मुल्कों में जाते हैं । लेकिन यहां पर बाहर से आये हुए टूरिस्ट परेशान हो जाते हैं ।

17 hrs.

मैं कश्मीर की बात करना चाहता हूं । कश्मीर एक खूबसूरत मुल्क है, कश्मीर को उस की तवारीख ने काफी रोशन रखा है । फिर कश्मीर इस वजह से भी मशहूर है कि वहां के जो सयासी हालात हैं वह इस किस्म के हैं । बहुत से लोग इस लिये वहां जाते हैं । यह हकीकत है कि मौसम का इलाज हम नहीं कर सकते, लेकिन सारे कश्मीर में कोई ट्रैवेल एजेन्ट ऐसा नहीं है जो फारेन टूरिस्ट्स की कोई सही इमदाद कर सके, कहीं उस की सीट को कैंसेल करा सके जब उसे कहीं बाहर जाना हो । अगर एक फारेनर कश्मीर जाता है तो चार पांच दिन के लिये जाता है । मौसम खराब होता है, तो वह चाहता कि बम्बई में जो उस का रिजर्वेशन है वह कैंसेल हो जाय या उसे मालूम हो कि चार या पांच दिन के बाद उसे सीट भी मिल सकती है या नहीं, लेकिन इस का कोई इन्तजाम नहीं है । मैं यकीन दिलाना चाहता हूं कि मैं ने बहुत बड़े फारेन्स तक को रोते देखा है सड़क पर कि वह क्या करे । कोई उस की तकलीफ का इलाज नहीं कर सकता, कोई नहीं बतला सकता कि कहां उस को जाना है और क्या करना है । जब लोग दो तीन दिन के लिये कश्मीर आते हैं तो सिर्फ इस लिये कि आप ने कश्मीर की बहुत पब्लिसिटी कर रक्खी है, लेकिन वहां जा कर वह फंस जाता है । उस का कोई इलाज नहीं हो पाता है । आई० ए० सी० में हम ने देखा है जो कि आप का इंडियन एअरलाइन्स कारपोरेशन है, कि जब वह किसी टूरिस्ट को कश्मीर पहुंचाता है तो वह वहां से वापस भी आना चाहता है, लेकिन जिस दिन उस की सीट

ग्जिर्व होती है, उस को जगह नहीं दी जाती है। इस की बेशुमार शिकायतें आई हैं फारेनर्स की तरफ से। जो हमारे डाइरेक्टर जनरल टूरिज़म के हैं या वजीर साहब हैं, उन का यह फर्ज हो जाता है कि वह इस चीज को देखें कि आखिर टूरिस्ट इस मुल्क में पैसा खर्च करना चाहता है, मुल्क की खूबसूरती से मुतासिर होने के अलावा यह चाहता है कि यहां लोगों के एख्लाक से भी मुतासिर हो, वह देखना चाहता है कि बढ़ते हुए हिन्दुस्तान में क्या होता है, हमारे देहात कैसे हैं, गांव कैसे हैं, लोग कितनी तरक्की कर पाये हैं। हम अपने टूरिज़्म को सिर्फ पुरानी और बहुत सी बोसीदा इमारतों पर ही नहीं चला सकते। बहुत से लोग इस मुल्क में सिर्फ इस लिये आते हैं कि नये हिन्दुस्तान को देखें, लेकिन मुझे बहुत अफसोस के साथ कहना पड़ता है कि नये हिन्दुस्तान के बारे में हमारे टूरिज़्म के आफिसर्स भी नहीं जानते हैं। उन्हें खुद हिन्दुस्तान का नक्शा नहीं मालूम कि क्या हिन्दुस्तान है। हमें इन चीजों की तरफ निहायत समझ से, निहायत अक्लमन्दी से और सब्र से देखना है कि आखिर किस तरह इस हम मुल्क में टूरिज़्म को बढ़ा सकते हैं।

मैं उम्मीद रखता हूं कि इस तरफ ख्याल किया जायेगा। मैं वजीर टूरिज़्म से कोई शिकायत नहीं करता। इस में कोई शक नहीं कि इस ऐवान में मैं ने अपनी पिछली तकरीर में इस डिपार्टमेंट की काफी तारीफ की है, और यकीन दिलाता हूं कि एक मेम्बर की हैसियत से, एक हिन्दुस्तान के शहरी की हैसियत से मेरा फर्ज हो जाता है कि मैं अच्छे काम की तारीफ करूं, लेकिन इस के साथ मुझ पर यह फर्ज़ भी आयद होता है कि मैं जहां पर कोई खामिय देखूं, उन को भी इस ऐवान के जरिये नोटिस में लाऊं।

मैं आखीर में सिर्फ एक शेर आप की खिदमत में पेश करना चाहता हूं जिस से किसी वजह से कहीं कोई नाराजगी न हो जाय :

रुए सखुन किसी की तरफ हो तो रू सियाह,
सौदा नहीं, जुनूं नहीं, वहशत नहीं मुझे।

[شری اے - ایم - طارق (جموں اور کشمیر) : اپادھیکس مہودے -- میں آج آپکو آدھہ گھنٹے کی بحث کرنے کی اسلئے تکلیف دے رہا ہوں کہ ۱۸ فروری کو میں نے اس ہاؤس میں ایک سوال پوچھا تھا جو اس طرح سے تھا اور اس کے بارے میں کچھہ اور عرض کرنا چاہتا ہوں -

"Will the Minister of Transport and Communications be pleased to state whether it is a fact that the Government of India propose to take further steps to attract more foreign tourists to India."

جہاں تک باہر کے ملکوں سے سیاحوں کو ہندوستان میں لانے کا مسئلہ ہے اس میں کوئی شک نہیں ہے کہ ہمارے وزیر صاحب اور دپارٹمنٹ اس کی بہت کوشش کرتے ہیں - لیکن یہ صرف کوشش کا سوال نہیں ہے بلکہ سوال یہ ہے کہ ہندوستان میں باہر سے آئے ہوئے لوگوں کو کیا کیا مناسب سہولیتیں پہنچائی جائیں - مناسب سہولیتوں کا مطلب صرف یہ نہیں ہے کہ ہم اس ملک کے مشہور ترین انسان پنڈت جواہر لال نہرو کا نام ہی اس سلسلہ میں پیش کریں - ابھی چند مہینے پہلے ہی ہمارے پرائم منسٹر صاحب نے اس

[شری اے - ایم طارق]

حالت میں کس طرح ذلالت کی حد تک روکا جاتا ہے اور اس سے ہوئی ایک معمولی سی غلطی پرجوشاد اس کی غلطی نہیں تھی بلکہ کس حد تک ہماری غلطی تھی - پریشان کیا جاتا ہے یہ دیکھنے والی بات ہے-اگرہم اس ملک میں سہی گائڈز کو - سہی ٹریول ایجنٹس کو رکگنائز کریں تو اس طرح کی تکلیف پیش نہ آئے - ایک ان-آتھورائزڈ ٹریول ایجنٹ نے اس کو ایک ایسی ٹیکسی میں بٹھا دیا جو کہ اس علاقے میں نہیں جا سکتی تھی چونکہ اس کے پاس لائسنس نہیں تھا وہاں وہ چلی گئی تو وہاں پر پولیس نے اس ٹیکسی کو پکڑا اور اس سیاح کے پاس جو بیگ وغیرہ تھے ان کو کھولا گیا اور اس کے پاس ایک قلیل مقدار میں جو شراب کی چند بوندیں تھیں اس بنا پر اس کو ذلیل کیا گیا - اس سلسلہ میں میں نہیں جانا چاہتا ہوں کہ شراب اچھی چیز ہے یا بری - لیکن آپکو فیصلہ کرنا ہے کہ شراب کو بالکل ہمیشہ کے لئے بلند کرنا ہے یا اس کو رکھنا ہے اور اگر کنسیشن دینے ہیں تو اس حد تک دینے ہیں جس کی باہر سے آئے ہوئے لوگوں کو توقع ہو - اب اس سے اسی ہزار روپیے کی ضمانت لی گئی یہ معاملہ امریکی ایوان میں آیا - امریکہ کے اخباروں نے اس کی چرچا کی - لیکن چرچا ہونا کوئی بڑی بات نہیں چیز کہ محسوس کیا تھا کہ باہر سے آئے ہوئے سیاحوں کو اس ملک میں کچھ تکلیف ہوتی ہے ان کو سہی قسم کا سلوک نہیں ملتا ہے اور اس کو سامنے رکھتے ہوئے انہوں نے ہندوستان کے لوگوں کے سامنے ایک اپیل رکھی تھی جس کے الفاظ یہ ہیں -

"Visitor from abroad has to be welcomed as a guest and as a friend, so that he returns to his own country and carries back with him happy memories of his visit to India".

یہ اپیل ابھی شائع بھی نہیں ہوئی تھی اس کی ابھی سیاہی بھی نہیں سوکھنے پائی تھی کہ ہمارے سامنے ایک مشہور امریکی شہری فریڈرک مارچ کا مسئلہ آیا - وہ جب ہندوستان میں آئے تو نہ صرف ہندوستان کی پرانی عمارتوں کو ہی دیکھنے آئے بلکہ موجودہ ہندوستان کو ترقی کرتے ہوئے ہندوستان کو اور موجودہ ہندوستان کی سولائزیشن کو بھی وہ دیکھنے آئے - ان کے ساتھ مدراس میں جو سلوک ہوا اس کے بارے میں ممبئی نے ایک ممبر نے امریکہ میں جس طرح کا پروٹسٹ کیا ہے اور امریکہ کے لوگوں نے جس طرح سے اس چیز کو محسوس کیا ہے وہ آپ جانتے ہیں - انہوں نے کہا ہے کہ جواہر لال کے ہندوستان میں اشوک کے ہندوستان میں اور بڑھتے ہوئے ہندوستان میں ایک امریکی سیاح کو کس طرح سے مجبوری کی

یہ سب باتیں ایسی ہیں جن کو یہاں رکھنے کے لئے مجھے اس ڈسکشن کو مانگنا پڑا -

یہاں پر میں یہ بھی کہہ دینا چاہتا ہوں کہ صرف پرائم منسٹر صاحب کا نام استعمال کرنے سے ان کے بڑے بڑے فوٹو چھاپنے سے ان کی اپیل کو موٹے موٹے الفاظ میں چھاپنے سے مسئلہ حل نہیں ہو سکتا ہے - کتنی خوبصورت تصویر تھی جس کے ساتھ پرائم منسٹر صاحب کی اپیل کو چھاپا گیا تھا - لیکن لوگوں کو وہ مل گئی اور انہوں نے اسکو کاٹ کر اپنے گھروں میں رکھ لیا - یہ کہا جاتا ہے کہ دنیا کے ایک مشہور فوٹوگرافر نے اس تصویر کو کھینچا تھا - اس واسطے اس ملک کے طالب علموں میں - اس ملک کے دوکانداروں میں اور عام انسانوں میں اس بات کو پیدا کرنے کی ضرورت ہے کہ باہر سے اگر کوئی ٹورسٹ آئے تو اس کے ساتھ کس قسم کا سلوک انہیں کرنا چاہئے - لیکن اس میں بھی اس چیز کا خیال رکھنا چاہئے کہ ہم اپنے لوگوں میں احساس کمتری—انفیریارٹی کمپلیکس —پیدا نہ کریں - ٹورزم کا صرف یہ مطلب نہیں ہے کہ باہر سے جو لوگ آتے ہیں صرف وہ ہی ٹورسٹ ہیں اور اپنے لاکھوں لوگ جو جاتے ہیں کسی جگہہ کو دیکھنے وہ ٹورسٹ نہیں ہیں - اگر ہم نے باہر کے ٹورسٹس کو ہے - بڑی بات یہ ہے کہ جب ہم اس ملک میں لاکھوں روپیے اس لئے خرچ کرتے ہیں کہ ہندوستان کی خوبصورتی کو شہرت دیں - یہاں کی دستکاری کو شہرت دیں یہاں کے لوگوں کے اخلاق کو شہرت دیں وہاں پر ہمارا تھوڑا سا یہ فرض بھی ہو جاتا ہے کہ ہم اپنے ڈپارٹمنٹ میں اور ایسے لوگوں میں جن کا تعلق ٹورزم سے ہے ان کو بھی اس قسم کی تربیت دیں جس کی کہ لوگ ان سے توقع کرتے ہیں - ہمیں چاہئے کہ ہم اچھے گائڈ پیدا کریں یہاں اچھے اچھے ہوٹل ہوں - ہمارے لئے یہ بھی ضروری ہے کہ ہم اپنے گائڈز کو سہی تعلیم دیں - ابھی پچھلے دنوں باہر کے ملکوں سے کچھ گائڈز - کچھ لوگ آئے تھے جو ٹریول ایجنٹ تھے جو ٹروزم کے ماہر تھے انہوں نے ان باتوں کی سفارش کی تھی - انہوں نے کہا تھا کہ ہندوستان میں جتنے بڑے بڑے ہوٹل ہیں انکے کچن اتنے صاف نہیں ہیں جتنے ہونے چاہئیں - یہ ایک حقیقت ہے -

ہم میں سے بہت لوگ جو اکثر جاتے ہیں - جو دیہاتی لوگ ہیں - وہ جاتے ہیں لال قلعہ کو یا تاج محل کو دیکھنے یا کسی اور جگہ کو دیکھنے تو ان کو کہیں بھی اچھے گائڈ نہیں ملتے ہیں جو انہیں عمارت کی خوبی سےعمارت کی تاریخی پس منظر سے روح شناس کرا سکیں -

[شری اے - ایم - طارق]

انکی اهمت نه دی هوتی تو یه معمولی سی بات اتنی شهرت حاصل نه کر جاتی - اس واسطے ان سب باتوں پر دهیان دینے کی آج ضرورت هے -

کئی سالوں سے هم یہاں پر کہتے آ رهے هیں که بهیک مانگنے والوں کا نمبر بہت حد تک بڑهتا جا رها هے - جہاں جائیے - ریلوے اسٹیشن پر جائیے - اگر ٹوروزم هم کو اس ملک میں نبهانا هے - ترقی دینی هے تو همیں یه دیکهنا هے که ٹورسٹس کو سہولیات بهی ملیں - هم ان سے بہت دام وصول کرتے هیں تو همارے ڈائریکٹر جنرل کے فرائض میں یه بهی هے - وه بہت اچهے آدمی هیں - دنیا کے ٹورزم سے واقف هیں - کافی سمجهدار هیں اس معامله میں - ریل کے ڈبوں کی جانچ کرانا ان کا کام هے که کس قدر گندے هیں همارے ڈبے - جب آپ فارینرس کو بلاتے هیں - وے لاکهوں روپیے خرچ کرنا چاهتے هیں اس ملک میں - تو ان کے لئے سہولیات پیدا کرنا بهی آپ کا فرض هو جاتا هے - ٹوروزم کے یه معنی نہیں هیں که هم لوگوں کو باهر سے لائیں لیکن ان کو لاکر مناسب سہولیات بهی نه پہنچائیں - هم کو بهی سہولیات ملتی هیں جب هم باهر کے ملکوں میں جاتے هیں - لیکن یہاں پر باهر سے آئے هوئے ٹورسٹ پریشان هو جاتے هیں -

17 hrs.

میں کشمیر کی بات کرنا چاهتا هوں - کشمیر ایک خوبصورت ملک هے - کشمیر کو اس کی تواریخ نے کافی روشن رکها هے - پهر کشمیر اس وجه سے بهی مشہور هے که وهاں کے جو سیاسی حالات هیں وه اس قسم کے هیں - بہت سے لوگ اس لئے وهاں جاتے هیں - یه حقیقت هے که موسم علاج هم نہیں کر سکتے - لیکن سارے کشمیر میں کوئی ٹریویل ایجینٹ ایسا نہیں هے جو فارن ٹورسٹس کی کوئی صحیح امداد کر سکے - کہیں اس کی سیٹ کو کینسل کرا سکے جب اسے کہیں باهر جانا هو - اگ ایک فارینر کشمیر جاتا هے تو چار پانچ دن کے لئے جاتا هے - موسم خراب هوتا هے تو وه چاهتا هے که بمبئی میں جو اس کا رزرویشن هے وه کینسل هو جائے یا اسے معلوم هو که چار یا پانچ دن کے بعد اسے سیٹ بهی مل سکتی هے یا نہیں - لیکن اس کا کوئی انتظام نہیں هے - میں یقین دلانا چاهتا هوں که میں نے بہت بڑے فارینرس تک کو روتے دیکها هے سڑک پر که وه کیا کرے - کوئی اس کی تکلیف کا علاج نہیں کر سکتا - کوئی نہیں بتلا سکتا که کہاں اس کو جانا هے اور کیا کرنا هے - جب لوگ

کے بارے میں ہمارے ٹورزم کے آفسرس بھی نہیں جانتے ہیں - انہیں خود ہندوستان کا نقشہ نہیں معلوم کہ کیا ہندوستان ہے - ہمیں ان چیزوں کی طرف نہایت سمجھ سے - نہایت عقلمندی سے اور صبر سے دیکھنا ہے کہ آخر کس طرح ہم اس ملک میں ٹورزم کو بڑھا سکتے ہیں -

میں امید رکھتا ہوں کہ اس طرف خیال کیا جائے گا - میں وزیر ٹورزم سے کوئی شکایت نہیں کرتا - اس میں کوئی شک نہیں کہ اس ایوان میں میں نے اپنی پچھلی تقریر میں اس ڈپارٹمنٹ کی کافی تعریف کی ہے - اور یقین دلاتا ہوں کہ ایک ممبر کی حیثیت سے ایک ہندوستان کے شہری کی حیثیت سے میرا فرض ہو جاتا ہے کہ میں اچھے کام کی تعریف کروں - لیکن اس کے ساتھ مجھ پر یہ فرض بھی عائد ہوتا ہے کہ میں جہاں پر کوئی خامیاں دیکھوں - ان کو بھی اس ایوان کے ذریعہ نوٹس میں لاؤں -

میں آخیر میں صرف ایک شعر آپ کی خدمت میں پیش کرنا چاہتا ہوں جس میں کسی وجہ سے کہیں کوئی ناراضگی نہ ہو جائے -

روئے سخن کسی کی طرف ہو
تو رو سیاہ -

سودا نہیں - جلون نہیں -
وحشت نہیں مجھے -

دو تین دن کے لئے کشمیر آتے ہیں تو صرف اس لئے کہ آپ نے کشمیر کی بہت پبلیسیٹی کر رکھی ہے - لیکن وہاں جا کر وہ پھنس جاتا ہے - اس کا کوئی علاج نہیں ہو پاتا ہے - آئی - اے - سی - میں ہم نے دیکھا ہے جو کہ آپ کا انڈین ایر لائنس کارپوریشن ہے - کہ جب وہ کسی ٹورسٹ کو کشمیر پہنچاتا ہے تو وہ وہاں سے واپس بھی آنا چاہتا ہے - لیکن جس دن اس کی سیٹ رزرو ہوتی ہے - اس کو جگہ نہیں دی جاتی ہے - اس کی بیشمار شکایتیں آئی ہیں فارینرس کی طرف سے - جو ہمارے ڈائریکٹر جنرل ٹورزم کے ہیں یا وزیر صاحب ہیں - ان کا یہ فرض ہو جاتا ہے کہ وہ اس چیز کو دیکھیں کہ آخر ٹورسٹ اس ملک میں پیسا خرچ کرنا چاہتا ہے - ملک کی خوبصورتی سے متاثر ہونے کے علاوہ یہ چاہتا ہے کہ یہاں کے لوگوں کے اخلاق سے بھی متاثر ہو - وہ دیکھنا چاہتا ہے کہ بڑھتے ہوئے ہندوستان میں کیا ہوتا ہے - ہمارے دیہات کیسے ہیں گاؤں کیسے ہیں لوگ کتنی ترقی کر پائے ہیں - ہم اپنے ٹورزم کو صرف پرانی اور بہت سی پوشیدہ عمارتوں پر ہی نہیں چلا سکتے - بہت سے لوگ اس ملک میں صرف اس لئے آتے ہیں کہ نئے ہندوستان کو دیکھیں - لیکن مجھے بہت افسوس کے ساتھ کہنا پڑتا ہے کہ نئے ہندوستان

Mr. Deputy-Speaker: Shri Shukla. He knows that he cannot make a speech. He can only ask a question or two.

Shri Vidya Charan Shukla (Baloda Bazar): I will just say two or three things.

I was quite surprised to hear Shri Tariq saying many things which did not concern the Directorate of Tourism at all. These things are mainly the responsibility of the State Governments. The Tourist Department of the Government of India has been at pains and had always been trying to convince and persuade these tourist departments set up by the various States to provide the facilities which are required by the tourists. I must compliment the Tourist Department that in spite of several difficulties and the most unimaginative things that happen at the State level they have been able to provide many facilities for the tourist which are available now. For instance, Shri Tariq was pleased to say that many of our tourist officers do not even know the map of India. With all respect to him, I want to say that he is entirely wrong. I have something to do with tourism, and I have met almost all the tourist officers of this country and abroad, and I have never met a tourist officer who does not know almost all the basic information about this country. They are very well informed. I must also say that the standard of guides and hotels has improved so much in the last five years that it is almost impossible to imagine how it was five years ago.

Mr. Deputy-Speaker: Half-an-hour discussion does not provide opportunity for Members to contradict each other. It only entitles a Member to ask a question from the Minister.

Shri Vidya Charan Shukla: There is a lot of confusion in the administration of tourist facilities in this country. I would like to know from the Minister what he proposes to do in future to clarify this confusion. For instance, the functions of the State and Central Governments have not been properly defined. What do the Government propose to do about it now?

In the morning, during Question Hour, I had to raise a few questions regarding IAC. The way they behave and function here almost puts the international and even the Indian travel agent out of schedule. The tourists who come to India from abroad have to plan their tours six to eight months in advance, but the operation schedules of the IAC are not fixed; even if they are fixed, they are changed after five days. The IAC and the Tourist Department are under the same Ministry. So, I would like to know from the Minister what they are going to do about such things.

Since you have ruled that I cannot say other things, I conclude.

श्री भक्त दर्शन (गढ़वाल) : उपाध्यक्ष महोदय, मैं अपने माननीय मित्र श्री शुक्ल जी की तरह मिनिस्ट्री की वकालत करने के लिये खड़ा नहीं हुआ हूं । लेकिन केवल दो तीन प्रश्न पूछना चाहता हूं, क्योंकि यह काम तो शायद मिनिस्टर महोदय का था न कि प्रश्नकर्ता महोदय का ।

मुझे बहुत से विदेशी पर्यटकों से यह जा कर प्रसन्नता हुई कि वे भारतीय भोजन, भारतीय संगीत और भारतीय जीवन की जानकारी करने के लिये भारत में आते हैं । लेकिन हमारी ओर से जो व्यवस्था की गई है, वह योरोपीयन ढंग के भोजन, और वहीं के रहन सहन के तरह की ही की जा रही है । तो क्या मैं माननीय मंत्री जी से जान सकता हूं कि जो विदेशी पर्यटक भारत की वास्तविक झांकी देखना चाहते हैं, या भारतीय जीवन के अन्दर रह कर उस का अध्ययन करना चाहते हैं, क्या

उस के लिये उन को कुछ सुविधायें दी जा रही हैं ?

मेरा दूसरा प्रश्न यह है कि बहुत से विदेशी पर्यटक हिमालय के सौन्दर्य को देखना चाहते हैं, लेकिन कुछ वर्षों से हिमालय की सीमा समानान्तर जो आन्तरिक रेखा, अर्थात् इनर लाइन, खींची गई है उस के कारण उन के वहां जाने में रुकावट हो रही है । ऐसे कुछ उदाहरण हैं कि उन्हें पर्मिट मिलने में बड़ी कठिनाई हुई है और बड़ी अड़चनें हुई हैं । जहां तक मुझे मालूम है, चीन सरकार के अनुरोध पर वह आन्तरिक रेखा, इनर लाइन खींची गई थी । तो क्या उस के संशोधन पर भी कोई विचार किया जा रहा है ? तथ्य यह है कि काफी विदेशी पर्यटक आज हिमालय के इंटीरियर में जाना चाहते हैं । जैसेकि मान लीजिये बद्रीनाथ इनर लाइन के अन्दर आ जाता है । बद्रीनाथ तक कोई विदेशी यात्री तब तक नहीं जा सकता जब तक उस के पास भारत सरकार की पर्मिट न हो । तो क्या इस रुकावट को दूर करने का प्रयत्न किया जायेगा ?

मेरा तीसरा प्रश्न यह है कि हम विदेशी पर्यटकों पर लाखों और करोड़ों रुपया खर्च कर रहे हैं लेकिन स्वयं हमारे भारतीय पर्यटक आज भारत की झांकी देख सकें, आज वे भारत को पहचान सकें और उन को भारत के विभिन्न स्वरूपों की जानकारी हो सके क्या इस के लिये भी कोई विशेष कदम उठाये जा रहे हैं ?

The Minister of State in the Ministry of Transport and Communications (Shri Raj Bahadur): I am extremely grateful to my hon. friend Shri Tariq for providing me with an opportunity to make certain clarifications in regard to certain points he has raised, particularly in regard to the Frederic March incident, an unfortunate incident took place recently.

He started by referring to an appeal that was made by the Prime Minister on a special occasion. That was on the inauguration of a campaign to promote tourism and tourist consciousness amongst our people. On that occasion we thought it fit that we should add prestige and importance to the whole campaign, by requesting our Prime Minister to give us message and he gave us a nice message and he gave us a nice message, an inspiring message, which has been very well appreciated by the hon. Member also, and I am grateful to him for his appreciation at least of the message and for the photograph that was carried along with the message. His complaint seems to be that while the message might be good, why the photograph was there, and he informs us that the photograph had been taken away from the message by some people who had seen it. Of course, he has appreciated the photograph as well. Well, our Prime Minister is not here at this moment. I am glad about that because I may only point out that our Prime Minister is a handsome person, and his photograph....

An Hon. Member: There are no two opinions about it.

Mr. Deputy-Speaker: But the Prime Minister will read these debates.

Shri Tyagi (Dehra Dun): On a point of order. This is admiration, and I think it should not be permitted. Admiration of beauty should not be permitted in this House.

Mr. Deputy-Speaker: Is it disagreeable to the hon. Member?

Shri Tyagi: It will land the House into hot waters because others might follow the precedent too far.

Shri Raj Bahadur: I admire the spirit in which Shri Tyagi has made this observation, but let me assure him that he is also a handsome person.

The Minister of Transport and Communications (Dr. P. Subbarayan): That is what Shri Tyagi wants.

Shri Raj Bahadur: And I feel that the cause for jealousy, if any, would be avoided by saying that.

Shri Radhelal Vyas (Ujjain): The hon. Minister also is handsome.

Shri Narasimhan (Krishnagiri): He is handsome in his tribute.

Shri Raj Bahadur: I am handsome in my tribute.

Mr. Deputy-Speaker: All Members inside are equally handsome.

Shri Raj Bahadur: I am grateful to you, for otherwise I would not have merited this remark.

My hon. friend's complaint was that a certain appeal of the Prime Minister seemed to arise from the consciousness which I think is not a fact, that our people lack in courtesy, courtesy to foreigners, courtesy to visitors, and courtesy to tourists. I can assure him, and I would like to disabuse his mind of this impression, that that was and is not the intention at all. If we ask our people to pay special attention to tourists, and if we organise campaigns in order to inculcate a consciousness on their part or in their minds towards tourists so that tourism and our steps to promote tourism may go apace, I think there is nothing wrong about it. That is done in several other countries, and I may say that even President Eisenhower made a personal appeal for a 'Visit America' Year, and I think that was much more than here in our case. So, I would say so far as that particular notion is concerned, that we got this appeal from the Prime Minister because we thought that there was some lack of courtesy on the part of our people, would be farthest and remotest from the truth of the situation. As a mater of fact, we should be proud of the traditions of courtesy and of respect that we have always extended to foreigners and visitors to our country.

We have always treated them as our guests. You know that in Hindi we have the word *'Atithi'*. Those who come to us with a date are welcome, but then those who come without a date also are welcome and twice welcome. So, there should be no apprehension or misgiving on the part of my hon. friend A. M. Tariq that our people lack in courtesy.

As a matter of fact, what we wanted was that in our attempts and endeavours to promote tourism, all those who, at one stage or the other, and at all levels, come in contact with the tourists must become conscious of their respective duties. That was all that was intended.

Shri Tyagi: They want to see Mussorie, but they are not shown Mussourie.

Shri Raj Bahadur: In fact, we held more than one conference at Mussourie. I think there was the Hoteliers' Convention, or I think, the Travel Agents' Convention was held there. The Prime Minister himself went to Mussourie once for it.

Shri Tyagi: These are only conferences of officials. I am saying that the tourists want to see Mussourie, but they are not shown Mussourie, and there is no arrangement for that.

Shri Raj Bahadur: Ws are taking proper steps, and if my hon. friend would let me know exactly what he has....

Mr. Deputy-Speaker: Shri Tyagi is not satisfied with the Dalai Lama?

Shri Raj Bahadur: I thank you very much, Sir, for this apt reply.

Shri Tyagi: I understand that now they are going to shift him from there, and they are sending him to Simla or Dalhousie.

An Hon. Member: To Dharamsala.

Shri Raj Bahadur: After all, it is in the Himalayan regions, and if he is

being shifted from Jaunser Bawar to Dalhousie, my hon. friend knows best the reason for that.

My hon. friend Shri A. M. Tariq then referred to the Frederic March incident. I think it would be better for me to read out certain parts of the statement that was made by the Minister for Home Affairs in the Madras Government, Shri Bhaktavatsalam on this particular point in the State Assembly.

Shri S. M. Banerjee (Kanpur): What was the quantity that he was carrying?

An Hon. Member: Maybe, just a few drops

Shri Raj Bahadur: So far as the quantity is concerned, before I come to it, to begin with, I might say that the incident was unfortunate. It was unfortunate not only because some foreign tourists were involved in it but also because some of the highest and most distinguished persons from America were involved in it. They were Dr. Crohen, a famous scientist, and Mr. Frederic March. So, when I read that statement, it is not in order to explain away things. This incident should never have occurred. It has been a reflection on us. There is no doubt about it, although the facts that have appeared in the Press are at variance with the facts as they have been stated by the Madras Minister.

Shri A. M. Tariq: Has the hon. Minister seen the statement of Mrs. March?

Shri Raj Bahadur: Let me quote to the House first what the authoritative and authentic pronouncements on the facts are given by the Minister of the State concerned, because it would be better for the House to see the whole picture.

> "The Minister said the tourists had at no time made any complaints that the police were rude to them."

This is one thing. Then:

> "The Minister disclosed that the report of Mr. Balakrishna Menon, Deputy Inspector-General of Police, Southern Range, who investigated the incident, had made these points;
>
> "The American tourists were technically guilty of an offence under the State Prohibition Act which was punishable with a maximum sentence of one year's rigorous imprisonment and a fine of Rs. 2,000."
>
> "The head constable was willing to allow them to proceed on bail after a case had been formally registered against them at Gudalur police station, but it was at the instance of the tourists themselves that the sub-magistrate at Utampalayam was moved to enable them to appear in court by 'proxy'.

A noteworthy fact is:

> "The head constable was not in a position to exercise discretion to overlook the offence when he discovered the liquor bottle."

We may perhaps punish the head constable for being rude and discourteous to the tourists, and there may be no apology for that. At the same time, let us also recognise that what the head constable did was as an honest servant of the State.

Shri Narasimhan: With what little head he has.

Shri Raj Bahadur: Of course, with what little head he has.

Shri Raghunath Singh (Varanasi): It may not be a broad head, but he has done his duty.

Shri Raj Bahadur: Of course he did but opinions may differ. As I said, the whole incident is unfortunate. We wish it had not happened. It would not be proper for me to in-

[Shri Raj Bahadur]

vestigate or go down deep into the facts of the case now, sift them and say whether the statement of the Madras Minister is correct or whether the statement that has appeared in the Press is correct. I take this opportunity to offer my unqualified apologies to the very respectable guests who came to our country, and I hope every one of the Members who expressed concern at the incident would accept our apologies tendered frankly and without reservation. We hope that hereafter we would ensure that such incidents do not occur.

But let me state here one important fact about the whole situation as it obtains today. The tourist department is not, if I may use the expression, a department of the basic type, that is, with its own basic authority or powers or jurisdiction. It is essentially a co-ordinating department, a department which looks after liaison between so many sections, departments, Ministries and Governments. Therefore, the writ of the tourist department does not run over all the officers and all the departments of States. We have however got certain bodies and organisations which do help us in overcoming the difficulties.

Shrimati Renu Chakravartty (Basirhat): But surely the tourist department cannot over-ride the law of the State. If Prohibition laws apply to Indians, they must apply to everybody. I do not understand this differentiation.

Shri Raj Bahadur: That is perfectly right. The hon. lady Member is stating what exactly Shri A. M. Tariq would not like to be stated.

Shrimati Renu Chakravartty: His point was that there was no liquor bottle. That is what we would like to know about.

Shri Raj Bahadur: That is wrong. There was liquor but in a very small quantity. There was also the fact that the permit that the foreign visitors had had also expired. It was valid upto 4th February, and the incident took place on the 8th February. Both these things were there.

As I said, these incidents have to be avoided. We do not want to explain away the whole incident by merely finding out some grounds, good, bad or indifferent.

I was speaking about the tourist department as a co-ordinating department. It depends on other Ministries and State Governments to function properly. Therefore, we find some difficulty.

I am at one with Shri A. M. Tariq that we must have good hotels. Of course, we must have good hotels. He says that we must ensure that there are no beggars hanging about on our railway stations or tourist spots.

Shri A. M. Tariq: I also draw attention to the need to have clean first-class compartments in railway trains.

Shri Raj Bahadur: I am coming to that.

Also, we should have good guides. He very well knows that we have taken good steps—and effective steps—to achieve some progress in all these directions.

About the hotels—he has not referred to this point—I say that we have accepted the recommendations of the Hotel Standards Committee and we are embarking on a programme of classification of hotels according to the star system. We also know that the Industrial Finance Corporation has relaxed its rules and the State Bank Act has also been amended in order to qualify certain hotels and the hotel industry to get the required loans for promotion and for development. We have also taken steps to have better guides so that by proper training they may be able to come up to the expectations of the tourists

and meet the needs of the situation. So, I would not dilate any more on this.

He has spoken about the reservation of bookings on the I.A.S. and particularly, in regard to tourists to Kashmir. Hundreds and thousands of tourists do come to Kashmir. There is no doubt about that. They also come back—most of them—after a very good and enjoyable time there. They are always full of sweet and pleasurable memories about Kashmir and its people, including Shri Tariq who comes from Kashmir.

Shri Tariq is a very hospitable person and I have drawn upon his hospitality many a time. I can very well say that most of those who go there do not complain even though they have to put up with some difficulty or inconvenience because of the hospitality they get there from the people and the Government. It happens that sometimes when the weather is inclement, the services have got to be cancelled. There are sometimes landslides and the road is not motorable. They have to put up with a good deal of inconvenience on such occasions. We have tried to avoid these inconveniences caused by the forces of Nature; as far as we can but we have not been able to provide some sort of mechanism or ropeway system....

Shri A. M. Tariq: What about having an International Agency there?

Shri Raj Bahadur: We would very much like to have a Travel Agency there. I can assure him that Bakshi Ghulam Mohammed, the Prime Minister of the State himself holds the portfolio of tourism there and he is himself looking after the arrangements for tourists, in putting them up in hotels, in looking after their transport facilities etc. I think it is really commendable and I am sure Shri Tariq will also join me in paying our tribute without any reservation to Bakshi Ghulam Mohammed for all that he has done for the promotion of tourism in his State. So, if there are certain difficulties, if there is any difficulty about the I.A.C. if there are certain difficulties about cleanliness on railways etc. we will try to remove them. Of course, there have been complaints. We have just now discussed the Railway Budget and we are all agreed that we should have clean railway compartments and we should have ample opportunities to travel and there should be less of inconvenience to our tourists. I think the Railway Ministry is alive to it and it is trying its best to improve cleanliness etc. But it does not mean that we are complacent about it (*Interruptions*).

I have also travelled by Janta trains because my home which is within 110 miles from here is very easily approachable by the Janta Express.

श्री आ० ० तारिक : आपने भी तो उसका हाल देखा है। आप खुद शिकायत फरमा रहे थे, आपने जंजीर भी खींची थी। अगर कोई हकीकत न होती तो आप ऐसा क्यों करते।

[شری اے - ایم - طارق - آپ نے بھی تو اس کا حال دیکھا ہے - آپ خود شکایت فرما رہے تھے - آپ نے زنجیر بھی کھلچی تھی - اگر کوئی حقیقت نہ ہوتی تو آپ ایسا کیوں کرتے -]

Shri Raj Bahadur: I think my hon. friend is taking too much advantage of a humorous incident which I related to another friend and which, however, has got no relation to the subject matter under discussion. But I would not repeat that here to save the time of the House. I would only say that so far as the development of tourism is concerned and so far as the removal of complaints about tourist facilities is concerned, my hon. friend

[Shri Raj Bahadur].

is also to some extent responsible along with me. Shri Shukla who is here, and Shri Tariq both of them are members of the Tourist Development Council and of the consultative committee and they are very vocal and effective members. Any word that drops from their lips is listened to with great respect and awe, if I may say so, because Shri Tariq, whenever he speaks speaks very effectively. I must pay my tribute for that. We have placed him in a position where he can give us all the advice that the department needs. We have given all the powers to him for that. I would only conclude by reading out a couplet that he gave me this morning which I think very well fits in and I have done with it. I hope he will bear with me.

Mr. Deputy-Speaker: One he kept for himself which he read and the other he has passed on to you.

Shri Raj Bahadur: It reads like this:

हमने उनके सामने पहले तो खंजर रख दिया

We have given him all the powers; he can do anything he likes (*Interruptions*).

फिर कलेजा रख दिया, दिल रख दिया, सिर रख दिया ।

Mr. Deputy-Speaker: The discussion is finished and the House stands adjourned to meet at 11 o'clock tomorrow.

17·26 hrs.

The Lok Sabha then adjourned till Eleven of the Clock on Friday, March 11, 1960/Phalguna 21, 1881 (Saka).